e-ISSN:2582-7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 7, Issue 12, December 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.521

© 2024 IJMRSET | Volume 7, Issue 12, December 2024| DOI: 10.15680/IJMRSET.2024.0712011

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

दलितों और महिलाओं की शिक्षा हेतु सावित्रीबाई फुले के प्रयास

डॉ. ममता पारीक
(सहायक आचार्य)
जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ
email id: mamtapareek2012@gmail.com
Mobile no. 9610015225

प्रस्तावना :–

आधुनिक युग में सामाजिक क्रान्ति का विचार सबसे पहले फुले दम्पत्ति के द्वारा ही रखा गया। वर्ण–व्यवस्था, जाति व्यवस्था, शूद्र, अतिशूद्र, ब्राह्मणवाद, नारी उत्थान, शिक्षा आदि महत्वपूर्ण विषयों पर सावित्रीबाई ने अत्यन्त मौलिक रूप में विचार प्रस्तुत किया। भारत में अंग्रेजी सत्ता के साथ आए नये ज्ञान, बुद्धिवाद, यंत्रयुग और विज्ञान के प्रकाश में ब्राह्मण धर्म, पोथी–पुराणों, धर्मग्रन्थों एवं सामाजिक मूल्यों की व्यवस्था करने के लिए 19वीं सदी के मध्य में जो विचारक सामने आए, उनमें सावित्री बाई फुले सबसे अग्रणीय है।

सावित्री बाई फुले बुद्धिमान लेखिका और प्रतिभा सम्पन्न कवयित्री थी। उनके शैक्षणिक कार्यो से उनके अध्यापन सम्बन्धी गुण प्रकट होते है, इसके अतिरिक्त तत्कालीन समाज को ध्यान में रखकर किये गये उनके लेखन से उनकी विचारधारा का अनुमान लगाया जा सकता है। सावित्री बाई फुले का 'काव्य फुले' नामक कविता संग्रह 1854 ई0 में प्रकाशित हुआ था। शूद्रों–अतिशूद्रों के उद्धार, उत्थान एवं महिला शिक्षा और महिला सशिक्तकरण के प्रति उनकी आस्था उनकी कविताओं से प्रकट होती है। सावित्री बाई फुले एक उत्तम अध्यापिका होने के साथ–साथ निःस्वार्थ समाज–सेविका भी थी और शूद्रो–अतिशूद्रों एवं समाज सुधार के

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

साथ–साथ महिला सशक्तिकरण आन्दोलन की महान नेतृत्वकर्ता भी थी। अपने पति के साथ जिस प्रकार सावित्री बाई ने शूद्र–अतिशूद्र और बालिकाओं के लिए स्थापित विद्यालयों में शिक्षण कार्य किया, उसी प्रकार अपने पति की मृत्यु के बाद 'सत्यशोधक समाज' को समर्थ एवं प्रभावी नेतृत्व प्रदान किया। सावित्री बाई फुले समाज सुधार के महत्त्वपूर्ण कार्य, महिलाओं की शिक्षा सम्बन्धी अति विशेष कार्य और महिला सशक्तिकरण के सन्दर्भ में अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निरन्तर संघर्षरत रही और अपने उद्देश्यों की पूर्ति में काफी हद तक सफलता भी प्राप्त की। सावित्री बाई फूले ने जिस 'स्त्री मुक्ति आन्दोलन' और 'महिला सशक्तिकरण' का महान कार्य आरम्भ किया, उसके परिणामस्वरूप आज अनेक महिलाएं जो चाहे उच्च वर्ग की हो या निम्न वर्ग की पुरूषों के साथ बराबरी से हर क्षेत्र में उच्च पदों पर आसीन है।

सावित्री बाई पहली शिक्षित स्त्री, पहली महिला अध्यापिका, भारत की सभी जातियों में स्त्रियों की पहली नेता और छूआ–छूत की प्रथा का प्रखर विरोध करने वाली पहली महिला कार्यकर्त्ता थीं। उनकी स्पष्टवादिता, शूद्र–अतिशूद्र समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने की उनकी दूरदृष्टि, सद्व्यवहार, विधवा प्रेम, विलक्षण बुद्धि के साथ दृढ़ ध्येय, निष्ठा आदि गुणों से उनकी महानता परिलक्षित होती है। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन शोषित–पीड़ित वर्ग, किसान, गरीब तथा मजदूर वर्ग के उत्थान के लिए समर्पित किया था।

सावित्रीबाई फुले के दलितों हेतु शिक्षा संबंधी विचार एवं प्रयास :–

19वीं शताब्दी में भी शिक्षा व्यवस्था पर ब्राह्मणवादी वर्चस्व स्थापित था, दलित वर्ग को शिक्षा से दूर रखा गया। सावित्रीबाई फुले ने इन वर्गों को शिक्षा दिलाने हेतु जीवन भर अथक प्रयास किए। सावित्रीबाई फूले ने दलितों की स्थिति

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

को सुधारने के लिए अपना पूरा जीवन लगा दिया। फुले दंपत्ति ने दलितों पर लगे अछूत के कलंक को धोने और उन्हें बराबरी का दर्जा दिलाने के लिए जीवन भर संघर्ष किया। फुले दंपत्ति के समय में दलित वर्ग की स्थिति काफी दयनीय थी, विभिन्न प्रकार की निर्योग्ताएं उनके उपर लाद दी गई थी जिससे उनका जीवन पशु समान हो गया था। सावित्री बाई फुले का मानना था कि शूद्रों के उत्थान के लिए केवल 'शिक्षा' ही एकमात्र उपाय है। सावित्री बाई फूले एक उच्च कोटि की अध्यापिका होने के साथ–साथ एक निःस्वार्थ समाज सेविका भी थी और शूद्रों–अति शूद्रों के आन्दोलन की महान नेता भी थी। पूना जैसे ब्राह्मणशाही के गढ़ में ब्राह्मणों के कट्टर और उग्र विरोध की चिंता न करते हुए समाज–सेवा करना सावित्री बाई की महानता को दर्शाता है।

प्राचीन भारत में शिक्षा का सार्वजनिक स्वरूप नहीं था, शिक्षा का संबंध धर्म से जोड़ा गया था। भारतीय समाज पर हिन्दू धर्म की वर्ण–व्यवस्था का विशेष प्रभाव था। हिन्दू धर्म की वर्ण–व्यवस्था ने अध्यापन और अध्ययन का अधिकार केवल ब्राह्मणों को ही दिया हुआ था। ब्रह्मणों के अलावा अन्य किसी को भी अध्ययन तथा अध्यापन का अधिकार नहीं था। शूद्र, अतिशूद्र तथा नारी को किसी भी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं था। उनकी शिक्षा पर धार्मिक प्रतिबन्ध लगे हुए थे इसलिए शूद्र–अतिशूद्र तथा नारी सैंकड़ों सालों तक अज्ञानता के गर्त में रहे।

सवित्रीबाई फुले का मानना था कि शूद्र–अतिशूद्र की सामाजिक तथा धार्मिक गुलामी का प्रमुख कारण अशिक्षा है। शूद्र–अतिशूद्रों में शिक्षा का प्रसार व प्रचार करने को उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था। शिक्षा के बिना भारतीय समाज का विकास नहीं हो सकता, यह महत्वपूर्ण सूत्र उन्होंने प्रस्तुत किया। आज शूद्र, अतिशूद्र और नारी में शिक्षा के विषय में जो जागृति पैदा हुई, उसका एकल

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

श्रेय सावित्रीबाई फुले को ही जाता है। आधुनिक काल में शिक्षा के संबंध में उन्होनें क्रान्तिकारी विचार प्रस्तुत किए और उन्हें भारतीय समाज में लागू करने का ऐतिहासिक कार्य भी उन्होनें किया।

सावित्रीबाई फुले ने शिक्षा के क्षेत्र में प्रत्यक्ष रुप से क्रान्तिकारी कार्य किया, इस कार्य में उनके पति ज्योतिबा फुले ने भी भरपूर सहयोग दिया। हिन्दू धर्म ने जिन्हें सदियों से शिक्षा से वंचित रखा ऐसे शूद्र–अतिशूद्रों की लड़कियों के लिए फुले दंपत्ति ने सन् 1848 में पूना के बुधवारपेठ में भिडे के मकान में पाठशाला शुरु की थी। इस पाठशाला में पढ़ाने के लिए कोई अध्यापक तैयार नहीं था तो सावित्रीबाई स्वयं लड़कियों की पाठशाला में पढ़ाने लगी। सावित्रीबाई फूले इस प्रकार भारत की पहली महिला शिक्षिका बनी। उन्नीसवीं सदी में स्कूल खोलकर उनको सुचारू रूप से चलाना कोई आसान कार्य नहीं था। उनके स्कूलों में सभी जातियों के बच्चे अध्ययन करते थे। स्त्री–शिक्षा एवं शूद्रातिशूद्रों की शिक्षा का जो महत्वपूर्ण कार्य फुले ने किया उसके पीछे उनका उद्देश्य था कि समाज परिवर्तन का एक प्रभावी साधन शिक्षा है। जो विद्यार्थी और लोग दिन के स्कूल में पढने नहीं जा सकते थे उनके लिए फुले ने सन् 1855 में रात्रिकालीन पाठशाला शुरु की थी। जिसमें दिनभर काम करने वाले मजदूर, किसान तथा गृहणियॉ अध्ययन करती थीं। यह भारत की प्रथम रात्रि पाठशाला थी।

वे केवल पाठशालाओं की स्थापना करने तक ही सीमित नहीं रहे बल्कि शिक्षा के विषय में जागृति पैदा हो सके इसके लिए उन्होंने विपुल मात्रा में लेखनकार्य भी किया। तत्कालीन सरकार को भी शिक्षा के प्रसार के संबंध में अनेक निवेदन भेजे। तत्कालीन समय में अँग्रेजों ने शिक्षा के दरवाजे सभी के लिए खोल दिए थे, इस बात का फुले ने स्वागत किया, उनका आभार माना। अँग्रेजों के समय

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

में शूद्र, अतिशूद्र और नारी को शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार मिला। यदि समाज के उच्चवर्ग के लोगों को शिक्षा दी जाए, तो बाद में वह झरते हुए निम्नवर्ग के लोगों तक पहुंचेगी। फुले ने शिक्षा के इस सिद्धान्त पर अँग्रेज सरकार का पक्ष लिया था। अँग्रेजों ने भारत में सभी के लिए शिक्षा आरंभ की, लेकिन फुले के अनुसार वे अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाये।

24 सितम्बर, 1873 में 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना करके दलित समाज में शिक्षा के प्रसार के लिए विशेष प्रयत्न किए गए। फुले दंपत्ति की यह ध्रुव धारणा थी कि सच्ची शिक्षा का प्रचार–प्रसार ही अंध परम्पराओं को नष्ट कर सकता है। जो गरीब मां–बाप फीस के लिए पैसे के अभाव में अपने बच्चों को पाठशाला में नहीं भेज पाते थे उनके लिए सत्यशोधक समाज द्वारा खर्च उठाने का प्रस्ताव पास किया। देहात के बच्चों को भी शिक्षा मिलनी चाहिए इसीलिए सत्यशोधक समाज की ओर से पाठशालाओं की स्थापना की गई। इस प्रकार फुले दंपत्ति ने दलितों हेतु शिक्षा के प्रसार के लिए कार्य किये थे। उनके द्वारा उन्नीसवीं सदी में प्रस्तुत किए गए दलित शिक्षा संबंधी विचार आज इक्कीसवीं सदी में भी अनुकरणीय हैं और हमारे भारतीय समाज के लिए उतने ही महत्वपूर्ण है।

महिलाओं की शिक्षा हेतु प्रयास सावित्रीबाई फुले के प्रयास :–

महिला शिक्षा की प्रेरणास्रोत सावित्रीबाई भारत की प्रथम अध्यापिका, समाजसेवी, क्रांतिकारी महिला तो हैं ही, साथ ही भारत में स्त्री मुक्ति आन्दोलन की प्रणेता भी हैं। उन्होंने जिस स्त्री मुक्ति आन्दोलन का सूत्रपात किया था, उसके परिणामस्वरूप ही आज अनेक महिलाएं उच्च पदों पर पहुंच सकी हैं। इस प्रकार सावित्रीबाई का नारी उत्थान में जो अभूतपूर्व योगदान था, वह आज भी किसी न किसी रूप में विद्यमान है। भारत की हर शिक्षित नारी उनकी ऋणी है। शिक्षा के

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

क्षेत्र में जितना कार्य फुले दम्पति ने किया है वह इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों से लिखा जाने का अधिकारी है। वस्तुतः सही मायनो में सावित्रीबाई फुले भारत की प्रथम क्रांतिकारी कार्यकर्त्री है। नारी उत्थान हेतु उनके द्वारा किए गए प्रयास अभूतपूर्व व अद्वितीय हैं।

सावित्री बाई फूले भारतीय इतिहास में पहली महिला थी, जिन्होंने घर की चहारदीवारी से बाहर निकलकर न केवल समाज सेवा के कार्यों में भाग लिया, बल्कि महिलाओं की सामाजिक एवं शैक्षणिक स्थिति को ऊपर उठाने के लिए भी प्रयास किये। महिलाओं की शिक्षा के कार्य में सावित्री बाई फूले को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, लेकिन फिर भी वे अपने कर्त्तव्य के मार्ग पर डटी रही और महिलाओं को शिक्षित करने के उद्देश्य में सफल हुई। इन्होंने अपने पति ज्योतिबा फुले द्वारा स्थापित विद्यालयों में शिक्षण कार्य किया। इनके द्वारा नारी शिक्षा को सभी जाति–धर्म की महिलाओं के लिए शुरू किया गया। इन्होंने महार, मातंग जैसी अछूत जातियों की लड़कियों को भी ज्योतिबा फुले द्वारा स्थापित विद्यालयों में प्रवेश दिया। महिलाओं को केवल पढ़ने–लिखने अथवा उनके साक्षर होने तक की शिक्षा को ही सावित्री बाई ने सीमित नहीं किया था। उनका विचार था कि शिक्षा के कारण महिलाऐं अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो पाती है और शिक्षा से ही उनके व्यक्तित्व का विकास संभव है। इन्होंने नारी शिक्षा का सम्बन्ध महिलाओं की स्वतंत्रता से जोड़ा था।

महिला शिक्षा के लिए सावित्री बाई फुले के पति ज्योतिबा फुले के द्वारा अनेक पाठशालाओं की स्थापना की गई, जिसमें पति–पत्नी दोनों शिक्षण कार्य करते थे। सरकारी विद्यालयों में बालिकाएं शिक्षा प्राप्ति हेतु जाने लगी, फिर भी न केवल उच्च जाति के द्वारा बल्कि निम्न जाति के पुरूषों के द्वारा बालिकाओं की शिक्षा का

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

विरोध किया गया। सावित्रीबाई फुले अनेक कष्ट सहन करते हुए, समाज की प्रताड़नाएं सहते हुए, स्वयं शिक्षित हुईं और भारत की प्रथम अध्यापिका का गौरव हासिल कर लिया। उन्होंने नारी शिक्षा आन्दोलन हेतु स्वयं को समर्पित कर दिया। 19वीं सदी में सार्वजनिक जीवन को अपनाने वाली प्रथम भारतीय महिला का गौरव भी उन्हें ही प्राप्त है।

सावित्रीबाई फुले के साहस और उत्साह को सराहने के बजाय निंदा करने वाले लोग अधिक थे क्योंकि बहुत कम लोग ही उनके काम के महत्त्व को समझते थे इसलिए उनका स्कूल चर्चा का विषय बन गया था। सावित्रीबाई का स्कूल में पढ़ाना कुछ लोगों के क्रोध का कारण का बन गया था। जब 1848 में स्कूल खुला था तब सावित्रीबाई की आयु 17 वर्ष की थी, उन दिनों विद्यालय की अध्यापिका बनना तो दूर की बात थी, स्त्रियों के घूँघट से बाहर आने की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। बाल्यावस्था में ही शादी करना, घर बसाना, घर का कामकाज करना, बच्चे जनना, पति की गुलामी करना आदि ही औरतों का धर्म माना जाता था।

सावित्रीबाई फुले मात्र स्त्री शिक्षा आन्दोलन तक ही सीमित न रहीं। उनका लक्ष्य स्त्रियों का चहुंमुखी विकास करना था। ज्योतिबा द्वारा खोले गये विधवाश्रम व अनाथाश्रम की देखरेख सावित्रीबाई फुले करती थीं। ज्योतिबा के निधन के बाद उनके द्वारा स्थापित सत्यशोधक समाज की बागडोर वर्ष 1891 ई. से 1897 ई. तक सावित्रीबाई ने संभाली। इन सात वर्ष के कार्यकाल में अनेक सभा सम्मेलनों में जाकर कार्यकर्त्ताओं का मार्गदर्शन किया तथा सम्बन्धित संस्थाओं का कुशल संचालन भी किया। वह मात्र अध्यापिका व समाजसेवी ही नही थीं, वे एक बुद्धिमान लेखिका तथा प्रतिभा संपन्न कवयित्री भी थीं। उनके द्वारा कृत कविता संग्रह 'काव्य

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

फुले' 1854 ई. में प्रकाशित हुई थी। सावित्रीबाई फुले को इस तरह तत्कालीन वातावरण के विरुद्ध कार्य करते देख उनके भाई व पीहर के अनेक लोगों ने भी उनको इस कार्य के लिए मना किया था। किन्तु सावित्रीबाई ने किसी की बात न सुनी और अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ निरंतर कार्य करती रहीं। उनका मानना था कि वे सत्य के मार्ग पर चल रहे हैं, उनकी विजय निश्चित होगी।

भारतीय स्त्रियों के समस्त मानवाधिकार छीन लेने से उसकी जो दयनीय स्थिति हो गई थी, उससे उबारने एवं समानता व शिक्षा दिलाने के प्रयासों की कड़ी में अत्यंत महत्त्वपूर्ण नाम सामाजिक एवं शैक्षणिक क्रान्ति के प्रणेता सावित्रीबाई फुले व ज्योतिबा फुले का आता है। उनका जीवन उनकी स्वप्रेरणा एवं स्वप्रयासों से बना था। नारियाँ अशिक्षित थी, इसीलिए उन पर अन्याय व अत्याचार किए गए, इस वजह से नारी शिक्षा की आवश्यकता पर ज्योतिबा फूले व सावित्रीबाई ने विशेष बल दिया। भारतीय नारियों को सम्मानजनक स्थिति दिलाने के लिए उन्होंने वास्तव में ही ऐतिहासिक कार्य किया। तत्कालीन समय में ब्राह्मण जाति का शिक्षा पर एकाधिकार बना हुआ था। उस समय अध्यापक तथा अधिकांश विद्यार्थी ब्राह्मण होते थे। अन्य वर्ग के बच्चों को पढ़ने का अवसर बहुत कम मिल पाता था। नारी शिक्षा के क्षेत्र में अमेरिकन मिशन द्वारा संचालित कन्याशाला, जिसे मिस फर्राट नामक विदेशी महिला चला रही थी। मिशनरियों द्वारा चलाई जाने वाली पाठशालाओं की सुसंगत तथा क्रमबद्ध कार्यप्रणाली का अच्छी तरह से अवलोकन करने के बाद फुले दंपत्ति उनसे बहुत प्रभावित हुए और पूना में लड़कियों के लिए ऐसी ही पाठशाला खोलने का निर्णय लिया।

बालिकाओं तथा अछूतों की पाठशालाओं का प्रारम्भ ज्योतिबा ने अपने पूर्व निश्चय के अनुसार 01 जनवरी 1848 ई. को पुणे की बुधवार पेठ में की गई तथा

© 2024 IJMRSET | Volume 7, Issue 12, December 2024| DOI: 10.15680/IJMRSET.2024.0712011

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

15 मई 1848 को पूना की गंजपेंठ में जहाँ शूद्र–अतिशूद्र अधिक संख्या में रहते थे, में एक पाठशाला प्रारम्भ की। ज्योतिबा के गुरू लहुजी सालवे और राणवा महार जाति के बच्चों के माता–पिता को समझा–बुझा कर कुछ छात्र–छात्राओं को लाने लगे। छात्र–छात्राओं को एक साथ पढ़ाने का फुले दंपत्ति का यह प्रथम प्रयोग था। उस समय की धार्मिक एवं सामाजिक मान्यताओं के समय यह बहुत ही निर्भयतापूर्ण तथा सराहनीय कार्य था। इस पाठशाला की अध्यापिका का कार्यभार प्रारम्भ में सगुणाबाई ने संभाला। बाद में सावित्रीबाई भी वहाँ पढ़ाने का कार्य करने लगी। सावित्रीबाई फुले ने पतन के गर्त में गिरे सम्पूर्ण भारतीय समाज के उत्थान के लिए न केवल एक आश्चर्यजनक व नवीन विचार प्रणाली ही प्रस्तुत की, बल्कि उसका प्रयोग भी सफलतापूर्वक किया और वह है नारी शिक्षा की व्यवस्था।

नारी शिक्षा के लिए विद्यालयों की स्थापना फुले व उनके मित्र सदाशिवराव गोवंदे ने स्त्री शिक्षा के लिए सर्वप्रथम प्रयास अपने ही घर से प्रारम्भ करने का निर्णय लिया। ज्योतिबा फुले ने अपनी पत्नी सावित्रीबाई को शिक्षित करना प्रारम्भ किया और स्वयं कन्याओं की शिक्षा हेतु एक पाठशाला पूना में खोली। प्रथम कन्या पाठशाला की स्थापना के समय छात्राओं की संख्या 6 थी, पाठशाला में सर्वप्रथम प्रवेश पाने वाली छात्राओं में से 4 छात्राएँ ब्राह्मण, एक धनगर(गड़रिया) एक मराठा जाति की थी। इस स्कूल में अपनी लड़कियों को भेजने के लिए अभिभावक डरते थे। लेकिन बाद में फूले दम्पत्ति ने अभिभावकों से मिलकर उन्हें समझाया और स्त्री शिक्षा के महत्व का वर्णन किया। सावित्रीबाई भारत में स्त्री शिक्षा हेतु कार्य करने वाली पहली महिला थी। इससे पहले कोई स्त्री सार्वजनिक कार्यों में भाग नहीं लेती थी। इसलिए उन्हें नारी शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाली प्रथम नारी होने का गौरव प्राप्त है। इस प्रकार वे भारत की प्रथम अध्यापिका बनीं।

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

पुणे में सावित्रीबाई जब पाठशाला जातीं, तब कट्टरपंथी उन पर ताने कसते, गालियां देते, कीचड़ और गोबर फेंकते थे लेकिन ये सारे अस्त्र उनकी लगन और दृढ निश्चय के आगे असफल हो गये। स्त्रियों के उत्थान के लिए अनेक कष्ट उठाते हुए ज्योतिबा और सावित्रीबाई, शिक्षा के कार्य में जुटे हुए थे। कन्या पाठशालाओं का प्रारम्भ केवल 8 छात्राओं से हुआ था, किन्तु शीघ्र ही यह संख्या बढ़कर 48 तक पहुंच गयी। अब तक उन्होंने एक पाठशाला प्रबंधन समिति भी बना ली थी। इस प्रबन्ध समिति ने 1851 ई. में एक और बालिका विद्यालय की स्थापना की। तत्पश्चात् 15 मार्च 1852 ई. में एक और कन्या पाठशाला की स्थापना बेताल पेठ में की। इस प्रकार फुले दंपत्ति ने 18 विद्यालय खोल दिये थे। 1855 में उन्होनें रात्रि पाठशाला खोली, जिसमें दिनभर काम करने वाले मजदूर, किसान तथा गृहणियॉ अध्ययन करती थीं। यह भारत की प्रथम रात्रि पाठशाला थी।

सावित्रीबाई फूले की निरंतर लगन, कार्य के प्रति निष्ठा और लगातार जागरूकता के कारण उनकी कन्या पाठशालाओं का स्तर बढ़ा और चारों ओर उनकी पाठशालाओं की सराहना की जाने लगी। फुले दंपत्ति ने पाठशालाओं की स्थापना छोटी सी अवधि में विभिन्न सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं का सामना करते हुए की थी। उन्नींसवीं शताब्दी में इन पाठशालाओं को चलाना कोई आसान कार्य नहीं था। उनके स्कूलों में सभी जातियों के बच्चे अध्ययन करते थे। स्त्री–शिक्षा एवं शूद्रातिशूद्रों की शिक्षा का जो महत्वपूर्ण कार्य फुले दंपत्ति ने किया उसके पीछे उनका उद्देश्य था कि समाज परिवर्तन का एक प्रभावी साधन शिक्षा है।

निष्कर्ष :–

इस प्रकार निष्कर्षरूप में हम कह सकते हैं कि 19वीं सदी में फुले दम्पत्ति ने अपना सम्पूर्ण जीवन सामाजिक चेतना लाने हेतु समर्पित कर दिया। उन्होंने श्रमिकों,

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

किसानों, दलित वर्गों और स्त्रियों पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाई और विभिन्न जातियों व धर्मों के लोगों को शिक्षा दी। उनकी धारणा थी कि शिक्षा हर दृष्टि से सुधार का प्रवेश द्वार है। शिक्षा के माध्यम से शूद्र–अतिशूद्र व स्त्रियों के जीवन स्तर से सुधार लाया जा सकता है। इन वर्गों में शिक्षा के बारे में कोई चेतना नहीं थी और राजनैतिक अधिकारों का तो इन वर्गों को कोई आभास ही नहीं था। भारत की प्रथम महिला शिक्षिका सावित्री फूले ने अपने पति ज्योतिबा फूले के साथ मिलकर महिलाओं की सोचनीय एवं दयनीय सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं शैक्षणिक स्तर को ऊपर उठाने के लिए समाज में फैली हुई कुरीतियों के विरूद्ध आवाज उठायी। उनके अनुसार शोषित पीड़ित महिलाओं में जागृति लाने के लिए उनमें शिक्षा के अधिकार का प्रसार–प्रचार होना आवश्यक है, शिक्षा के माध्यम से वह अपने स्वतंत्रता के अधिकार और कानून के सुरक्षा कवच को समझ सकेंगी साथ ही साथ अत्याचारियों का डटकर मुकाबला भी कर सकेंगी और उन्हें उनकी सीमा और कर्त्तव्य बता सकेंगी। इस तरह वह शोषण से मुक्त हो सकेंगी। वे महिलाओं की परम्परागत दयनीय एवं शोचनीय दशा के लिए जिम्मेदार मनुवादी विचारधारा और परम्परागत सामाजिक व्यवस्था को नकार कर मानवीय मूल्यों पर आधारित परिवर्तनवादी विचारधारा और प्रगतिशील समाज व्यवस्था को मान्यता दे सकेगीं।

जो महिलायें 'महिला मुक्ति आन्दोलन' से जुड़कर घर की जिम्मेदारियों को निभाते हुये, समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाती है– ऐसी महिलाओं को समाज में उपेक्षा और क्रोध का शिकार होना पड़ता है, जैसा कि 'सावित्री बाई फूले' के साथ हुआ था। ऐसी महिलाओं के प्रति समाज का प्रमुख कर्त्तव्य है कि वह उन बुद्धिमान, बहादुर और कर्त्तव्यनिष्ठ महिलाओं का सम्मान करें, उनके निर्देशों का पालन करें और अपने घर की महिलाओं की उन्नति में सहयोग देकर महिला

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

उत्थान में अपना योगदान दे। महिलाओं के जीवन को केवल घर–गृहस्थी, बच्चे संभालना, भोजन पकाना तक ही सीमित नहीं समझना चाहिए, बल्कि उन्हें भी पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त है। पुरूषों के समान महिलायें भी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी दखल रखने की अधिकारी है।

सावित्री बाई फूले ने अपनी तथा अपने परिवार की सुख–दुःख की परवाह न करते हुए, देश के सदियों से शोषित, पीड़ित एवं सभी अधिकारों से वंचित दलितों एवं महिलाओं के शिक्षा में अभूतपूर्व एवं क्रान्तिकारी आन्दोलन को नयी गति एवं दिशा देने का महत्वपूर्ण कार्य किया, जो भारतीय दलितोद्धार, महिला समाज सुधार एवं महिला सशक्तिकरण की दिशा में मील का पत्थर साबित हुआ। दलितों एवं महिलाओं के जीवन में क्रान्तिकारी चेतना जागृत करने वाली सावित्री बाई फूले सही अर्थों में प्रकाश पुंज थी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. सविता (2018), "क्रान्ति ज्योति सावित्री बाई फूले – एक अध्ययन (महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में)", दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय http://hdl.handle.net/10603/273594
2. ढाँडा, सुप्रिया (2020), "महात्मा ज्योतिबा फुले व सावित्री बाई फुले का सामाजिक व नारी उत्थान में योगदान", इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय, रेवाड़ी http://hdl.handle.net/10603/467781
3. जाटव, विजय लक्ष्मी (2015), "महात्मा ज्योतिबा फुले एवं सावित्रीबाई फुले का भारतीय नारी शिक्षा में योगदान", जीवाजी विश्वविद्यालय http://hdl.handle.net/10603/51340
4. तड़ागी, डॉ. सावित्री (2020), "सावित्रीबाई फुले– भारत की पहली महिला शिक्षिका एवं समाज सुधारक" International Journal of Scientific & Innovative Research Studies, Vol (8), August 2020, ISSN: 2347-7660(Print) ISSN: 2454-1818(Online)

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

5. कुमार, मनोज (2019), "स्त्री शिक्षा में महात्मा ज्योतिबा फुले व सावित्रीबाई फुले का योगदान" Journal of Acharya Narendra Dev Research Institute, Vol (28), June-August 2019, ISSN: 0976-3287

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

| Mobile No: +91-6381907438 | Whatsapp: +91-6381907438 | ijmrset@gmail.com |

www.ijmrset.com